अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओ की सामाजिक स्थिति

ऋचा चौधरी

पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, पलहीपट्टी, वाराणसी।

संक्षेप

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी (600–1200 ई.) भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण कालखंड था, जिसमें समाज, धर्म और सत्ता संरचनाओं में गहरे परिवर्तन हुए। इस समय महिलाओं की सामाजिक स्थिति वर्ग, जाति, धर्म और पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर विविध रूपों में देखी जाती थी। उच्च जातियों की महिलाएं घरेलू कार्यों और मर्यादाओं तक सीमित थीं, जबकि निम्न वर्ग की महिलाएं श्रम, कृषि और दस्तकारी जैसे कार्यों में सक्रिय थीं। शिक्षा, संपत्ति अधिकार और राजनीतिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका सीमित थी, परंतु कुछ अपवाद रूप में वे धर्म, साहित्य और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेती थीं। धार्मिक दृष्टि से महिलाएं व्रत, पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं, परंतु निर्णयकारी भूमिकाओं से वंचित थीं। देवी-पूजा और भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की प्रतीकात्मक महत्ता को तो बढ़ाया, परंतु व्यवहारिक जीवन में उनकी स्वतंत्रता पर नियंत्रण बना रहा। विधवा, पुनर्विवाह, पर्दा प्रथा और बाल विवाह जैसे सामाजिक पहलुओं ने महिला जीवन को और अधिक सीमित कर दिया। फिर भी, उनका योगदान पारिवारिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में निरंतर बना रहा।

प्रमुख कीवर्ड: गंगा घाटी में महिलाओं की स्थिति, महिलाओं की शिक्षा, धार्मिक भागीदारी, सामाजिक भूमिका, आर्थिक सहभागिता.

प्रस्तावना

गंगा घाटी भारत के उत्तर और पूर्वी हिस्से में फैला एक अत्यंत उपजाऊ, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध भू-भाग है। यह क्षेत्र गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा सिंचित होता है, जो हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा, धर्म और राजनीति का प्रमुख केंद्र रहा है। वैदिक सभ्यता से लेकर मौर्य, गुप्त, पाल और सेन वंशों तक गंगा घाटी ने भारतीय उपमहाद्वीप में शक्ति और संस्कृति के केंद्र के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ की उपजाऊ भूमि, जल स्रोतों की प्रचुरता और व्यापारिक मार्गों की उपलब्धता ने इसे प्रारंभिक नगर विकास और साम्राज्य विस्तार के लिए उपयुक्त स्थल बनाया।

गंगा घाटी न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक विरासत भी अत्यंत समृद्ध है। यह क्षेत्र हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मों की जन्मस्थली रहा है। यहाँ स्थित वाराणसी, प्रयाग, नालंदा, पाटलिपुत्र और विक्रमशिला जैसे नगर प्राचीन काल के शिक्षा, दर्शन और धर्म के प्रमुख केंद्र रहे हैं। भक्ति

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

आंदोलन और लोक संस्कृति की कई धाराएं भी यहीं से उत्पन्न हुईं। गंगा नदी को जीवनदायिनी और पवित्र माना जाता है, जिससे इस घाटी की धार्मिक महत्ता और भी बढ़ जाती है। यहां की लोक परंपराएं, भाषा, गीत-संगीत और उत्सव इस क्षेत्र की जीवंत सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। इस प्रकार, गंगा घाटी केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि भारत की ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक विकास और सांस्कृतिक मूल्यों की आधारभूमि भी है।

पूर्व मध्यकालीन काल (लगभग 600 ई. से 1200 ई.) के दौरान गंगा घाटी क्षेत्र जिसमें वर्तमान उत्तर प्रदेश, बिहार, और बंगाल के भाग शामिल हैं भारत का एक प्रमुख सांस्कृतिक, धार्मिक, और राजनीतिक केंद्र था। यह समय धार्मिक पुनर्जागरण, सामाजिक संरचना में परिवर्तन, तथा नए शासकीय व प्रशासनिक तंत्रों के विकास का था। इस काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति बहुआयामी थी, जो समय, स्थान और सामाजिक वर्गों के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में देखी जाती है। ब्राह्मणवादी परंपराओं, बौद्ध व जैन धार्मिक प्रभावों, और क्षेत्रीय राजाओं के संरक्षण के कारण महिलाओं की भूमिका समाज में महत्वपूर्ण होते हुए भी सीमित होती गई। वैदिक काल की तुलना में इस युग में महिलाओं की स्वतंत्रता में कुछ गिरावट देखी जाती है, विशेष रूप से उच्च जातियों में। पुनर्विवाह, विधवा विवाह और स्त्रियों की शिक्षा की स्वीकृति में भी गिरावट आई थी, हालांकि समाज के कुछ वर्गों में महिलाओं की भागीदारी बनी रही। इस काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर विभिन्न कारकों का प्रभाव रहा जैसे धर्म, जाति व्यवस्था, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण, तथा परिवार में पुरुषों की प्रधानता। कुलीन वर्ग की महिलाएं अक्सर पर्दा प्रथा और गृहस्थ जीवन तक सीमित थीं, जबकि कृषक वर्ग और शूद्र महिलाएं कृषि व श्रम कार्यों में भागीदारी करती थीं। स्त्रियों की शिक्षा सीमित थी, परंतु कुछ अपवाद स्वरूप महिलाएं साहित्य, धर्म और राजनीति में भी सक्रिय थीं जैसे कुछ शासक स्त्रियां (राजमाताएं या रानियां), बौद्ध भिक्षुणियां, अथवा कवयित्रियां। धार्मिक ग्रंथों और स्मृतियों ने महिलाओं की अधीनता को नैतिक रूप से उचित ठहराने की कोशिश की, परंतु लोक परंपराओं में महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्त थीं। कुल मिलाकर, पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जटिल थी — जिसमें एक ओर उन्हें सम्मानित देवी के रूप में पूजा जाता था, तो दूसरी ओर वे सामाजिक रीतियों की बेड़ियों में भी जकड़ी हुई थीं।

अध्ययन की आवश्यकता

गंगा घाटी में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन इसलिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह कालखंड भारतीय समाज की संरचना, धार्मिक चेतना और सांस्कृतिक विकास का आधार रहा है। इस क्षेत्र ने मौर्य, गुप्त, पाल जैसे प्रभावशाली राजवंशों और बौद्ध, जैन तथा हिन्दू धर्मों की गहन गतिविधियों का साक्षी रहकर भारतीय इतिहास को दिशा दी। ऐसे में यह जानना कि इस सामाजिक-सांस्कृतिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

परिवेश में महिलाओं की क्या भूमिका थी, उनके अधिकार, दायित्व, सीमाएं और योगदान किस प्रकार के थे, समाज की गहराई से समझ के लिए अनिवार्य हो जाता है। अक्सर इतिहास में महिलाओं की भूमिका को हाशिये पर रखा गया है या उन्हें केवल पितृसत्ता की शिकार के रूप में प्रस्तुत किया गया है, परंतु वास्तव में वे सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्रों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सक्रिय थीं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कैसे जाति, वर्ग, धर्म और परंपराएं महिलाओं की स्थिति को निर्धारित करती थीं और किन-किन विरोधाभासों के बीच वे अपने अस्तित्व और भूमिका को बनाए रखने का प्रयास करती थीं। आधुनिक समय में जब महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता पर बल दिया जा रहा है, तब अतीत की स्त्री-स्थिति को समझना आवश्यक हो जाता है ताकि यह ज्ञात हो सके कि वर्तमान संघर्षों की जड़ें कहाँ तक फैली हैं। इस ऐतिहासिक समीक्षा से न केवल महिलाओं की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया जा सकता है, बल्कि समकालीन समाज के लिए अधिक समावेशी दृष्टिकोण भी विकसित किया जा सकता है।

विषय की भूमिका एवं प्रासंगिकता

भारत का इतिहास सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड रहा है। विशेषकर गंगा घाटी क्षेत्र जो उस समय भारत का सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र था. वहाँ की सामाजिक संरचना ने भारतीय समाज के भविष्य को गहराई से प्रभावित किया। इस काल में समाज का संगठन धर्म, जाति और परंपराओं पर आधारित था, जिसमें महिलाओं की स्थिति एक जटिल और बहुपरतीय स्वरूप में देखने को मिलती है। गंगा घाटी में महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक दायरे तक सीमित नहीं थी; उन्होंने धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों में भी विविध रूपों में भाग लिया। यही कारण है कि इस विषय पर अध्ययन न केवल महिलाओं के ऐतिहासिक अनुभवों को उजागर करता है, बल्कि उस युग की सामाजिक व्यवस्था को भी समझने का अवसर प्रदान करता है।

इस विषय की प्रासंगिकता आधुनिक संदर्भ में और भी अधिक बढ़ जाती है, जब हम लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं। यह शोध हमें यह जानने में मदद करता है कि ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को किस प्रकार की सामाजिक भूमिकाएं प्रदान की गईं और किस हद तक वे स्वतंत्रता या दमन का अनुभव करती थीं। यह अध्ययन उन संरचनात्मक तत्वों की पहचान करता है, जो आज भी समाज में महिलाओं की स्थिति को प्रभावित कर रहे हैं। गंगा घाटी जैसी समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करके हम यह समझ सकते हैं कि परंपराएं, धर्म और सत्ता किस प्रकार मिलकर किसी वर्ग विशेष यहाँ महिलाओं की सामाजिक पहचान को आकार देती हैं। अतः

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

यह विषय न केवल इतिहासकारों बल्कि समाजशास्त्रियों, नारीवादियों और नीति निर्माताओं के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

साहित्य की समीक्षा

विके ठाकुर और आर. के. सिन्हा (2005) प्रारंभिक मध्य गंगा घाटी (1500 ई.पू.–300 ई.पू.) का कालखंड भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक संरचना और लैंगिक भूमिकाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था। इस अवधि में समाज धीरे-धीरे जनजातीय व्यवस्था से राज्य प्रणाली की ओर बढ़ रहा था, जिससे स्त्री-पुरुष संबंधों और उनके अधिकारों में बदलाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। वैदिक साहित्य, पुरातात्विक साक्ष्य और समकालीन ग्रंथों से यह संकेत मिलता है कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति धीरे-धीरे सीमित होती गई, विशेषतः उच्च जातियों में। विवाह, मातृत्व और पितृसत्ता के दायरे में उनकी भूमिकाएं परिभाषित की गईं, जबकि निम्न जातियों और श्रमिक वर्ग की महिलाएं आजीविका से जुड़े कार्यों में अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र थीं। धार्मिक अनुष्ठानों और संपत्ति अधिकारों में लैंगिक भेद स्पष्ट था। यह अध्ययन गंगा घाटी की सामाजिक संरचना में स्त्रियों की भूमिका को समझने के लिए एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो भारतीय समाज की प्रारंभिक लैंगिक धारणाओं की गहराई को उजागर करता है।

रोमिला थापर (1999) इस पुस्तक में रोमिला थापर ने पहली सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य में गंगा घाटी की सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण किया है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार जनजातीय और वंशीय संरचनाएं क्रमशः संगठित राज्य प्रणालियों में रूपांतरित हुईं। इस परिवर्तन के साथ सामाजिक वर्गों, लैंगिक भूमिकाओं और आर्थिक संरचनाओं में भी परिवर्तन आया। स्त्रियों की भूमिका इस प्रक्रिया में सीमित होती गई और पितृसत्ता का वर्चस्व मजबूत हुआ। थापर का शोध गंगा घाटी में सत्ता और समाज के अंतर्संबंध को गहराई से समझने में सहायक है।

सतीश कुमार (2015) – गाहड़वाल काल में ग्रामीण समाज और अर्थव्यवस्था यह अध्ययन गंगा घाटी के गाहड़वाल शासकों (11वीं–12वीं शताब्दी) के काल में ग्रामीण जीवन और अर्थव्यवस्था पर केंद्रित है। लेखक ने दिखाया कि किस प्रकार कृषि, कर-प्रणाली और श्रमिक वर्ग समाज की रीढ़ थे। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका इस काल में दोहरी थी—घरेलू कार्यों के साथ-साथ कृषि और दस्तकारी में भी उनकी भागीदारी थी। यद्यपि पितृसत्ता का प्रभाव बना रहा, फिर भी निम्न वर्ग की महिलाएं आर्थिक कार्यों में अधिक स्वतंत्रता का अनुभव करती थीं। यह लेख सामाजिक इतिहास को आर्थिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

एस. के. पांडा (1991) यह पुस्तक उड़ीसा के मध्यकालीन समाज और अर्थव्यवस्था की गहराई से समीक्षा करती है। पांडा ने वर्णन किया कि कैसे भूमि स्वामित्व, कृषि उत्पादन और शिल्पकला समाज के केंद्रीय तत्व थे। महिलाओं की स्थिति सामान्यतः पारंपरिक दायरे में सीमित थी, परंतु निम्न जातियों और ग्रामीण समुदायों में वे आर्थिक गतिविधियों में शामिल थीं। धार्मिक रीति-रिवाजों और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण उनकी सामाजिक गतिशीलता सीमित रही। यह अध्ययन पूर्वी भारत की सामाजिक बनावट को समझने में महत्त्वपूर्ण है।

एम. के. कुमारी (1990) कुमारी ने आंध्र प्रदेश के मध्यकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन की विस्तृत व्याख्या की है। उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार धार्मिक आंदोलन, जातीय संरचना और सांस्कृतिक परंपराएं समाज में व्याप्त थीं। महिलाओं की भूमिका को विशेष रूप से धार्मिक अनुष्ठानों, नृत्य-गायन तथा सेवा कार्यों से जोड़ा गया। जबकि कुछ उच्च वर्ग की महिलाएं साहित्य और मंदिर प्रबंधन में सक्रिय थीं, अधिकांश महिलाओं की स्थिति सीमित और नियंत्रणाधीन रही। यह अध्ययन दक्षिण भारत की स्त्री स्थिति पर उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

सतीश चंद्र (2008) सतीश चंद्र की यह कृति मध्यकालीन भारत में सामाजिक संरचना, आर्थिक संबंधों और सांस्कृतिक रूपांतरणों की विस्तृत समीक्षा करती है। उन्होंने दिखाया कि समय के साथ धर्म, जाति, लिंग और वर्ग आधारित विभाजन किस तरह गहरे होते गए। स्त्रियों की स्थिति को उन्होंने बदलते सामाजिक संदर्भों में देखा, जहाँ कुछ सुधार आंदोलन और भक्ति परंपराओं ने महिलाओं को नई भूमिका दी, लेकिन समग्र दृष्टि से वे पितृसत्तात्मक व्यवस्था में बंधी रहीं। यह पुस्तक मध्यकालीन भारतीय समाज के विकास की समग्र दृष्टि देती है।

गंगा घाटी का ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्व

गंगा घाटी भारत की सबसे प्राचीन और उर्वर सभ्यताओं में से एक रही है। यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से उपजाऊ है, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध रहा है। सिंधु घाटी के पश्चात गंगा घाटी वह स्थल बना जहाँ वैदिक संस्कृति का विकास हुआ और सामाजिक संरचनाएं अधिक संगठित रूप लेने लगीं। मौर्य, गुप्त, वर्धन और पाल राजवंशों जैसे शक्तिशाली साम्राज्यों ने इस क्षेत्र को अपने अधीन करके राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बनाया। इसके अलावा यह क्षेत्र बौद्ध, जैन और हिन्दू धर्मों के धार्मिक आंदोलन का केंद्र भी रहा, जिससे यहाँ की सामाजिक चेतना और विचारधाराएं गहराई से प्रभावित हुईं। यहाँ की सभ्यता ने भारत के धार्मिक ग्रंथों, साहित्य और कला को अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

सांस्कृतिक दृष्टि से गंगा घाटी ने भारत की सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक सह-अस्तित्व की मिसाल प्रस्तुत की है। यहाँ उत्पन्न बौद्ध और जैन धर्मों ने स्त्रियों को धार्मिक स्वतंत्रता और साध्वी जीवन जीने का अधिकार प्रदान किया, जबकि ब्राह्मण धर्म में सामाजिक नियंत्रण अधिक सशक्त रूप में मौजूद रहा। इस क्षेत्र में नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों का विकास हुआ जहाँ स्त्रियों की भी सीमित लेकिन महत्वपूर्ण भागीदारी देखी गई। लोक परंपराओं, भक्ति आंदोलन और देवी-पूजा की परंपराओं ने भी महिलाओं को सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में प्रतीकात्मक महत्ता प्रदान की। इस प्रकार गंगा घाटी न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज की जड़ें समझने के लिए एक प्रमुख आधार भूमि के रूप में कार्य करती है।

समाज में महिलाओं की स्थिति का स्वरूप

1. पारिवारिक संरचना में स्थान

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में पारिवारिक संरचना पितृसत्तात्मक थी, जिसमें पुरुष प्रधानता स्पष्ट रूप से देखी जाती थी। परिवार की संपत्ति, निर्णय और प्रतिष्ठा का केंद्र पुरुष ही होता था, और महिला को मुख्यतः पत्नी, माता या पुत्री की भूमिका में देखा जाता था। महिलाओं का अस्तित्व पारिवारिक दायरे तक सीमित कर दिया गया था, जहाँ उनका प्रमुख कर्तव्य संतानोत्पत्ति, पालन-पोषण और गृहकार्य था। समाज की यह संरचना धर्मशास्त्रों, स्मृतियों और सामाजिक नियमों से निर्देशित होती थी, जो महिलाओं की अधीनता को नैतिक रूप से उचित ठहराते थे। हालांकि, कुछ उच्च वर्गों में महिलाओं को परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका दी जाती थी, विशेष रूप से राजघरानों में। वहीं कृषक और श्रमिक वर्ग में महिलाएं घर के कार्यों के अलावा आर्थिक श्रम में भी सहभागी थीं, जिससे उनका पारिवारिक योगदान अधिक व्यावहारिक और आवश्यक बन जाता था।

2. विवाह व्यवस्था

गंगा घाटी की समाज व्यवस्था में विवाह को एक धार्मिक कर्तव्य माना जाता था और इसका उद्देश्य मुख्यतः वंशवृद्धि था। बाल विवाह की प्रथा समाज में प्रचलित हो चुकी थी, जिससे बालिकाओं की शिक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर रोक लगती थी। बहुपतित्व की अनुमति मुख्यतः राजाओं और धनी वर्गों में थी, जबकि सामान्य वर्ग में यह कम देखा जाता था। पुनर्विवाह पर समाज की दृष्टि नकारात्मक थी, विशेषकर उच्च जातियों में। विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय मानी जाती थी; उन्हें सामाजिक और धार्मिक कार्यों से बहिष्कृत किया जाता था तथा जीवनभर संयमित जीवन जीने के लिए बाध्य किया जाता था। विधवा विवाह समाज में अपवाद के रूप में ही स्वीकार्य था, और वह भी निम्न जातियों में अधिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

प्रचलित था। इस प्रकार विवाह संस्था ने महिलाओं को समाज के भीतर सीमित और नियंत्रित भूमिका में बाँधे रखा।

3. शिक्षा व विद्वत्ता में भागीदारी

पूर्व मध्यकालीन काल में महिलाओं की शिक्षा तक पहुंच बहुत सीमित थी, विशेषकर उच्च जातियों में। ब्राह्मण धर्मग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि कन्याओं को वेदाध्ययन की अनुमति नहीं थी, और शिक्षा को पुरुषों का अधिकार माना जाता था। हालांकि कुछ अपवादों के रूप में बौद्ध और जैन परंपराओं में भिक्षुणियों को शिक्षा व साधना में भाग लेने की अनुमति थी। इन धार्मिक समुदायों ने महिलाओं को सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया, जिससे वे धर्मप्रचार और दर्शन में योगदान कर सकीं। इसी तरह, कुछ राजघरानों की स्त्रियां जैसे रानियां या राजकुमारियाँ, जिन्हें विशेष रूप से शिक्षित किया जाता था, कभी-कभी साहित्य और काव्य में योगदान देती थीं। लेकिन ये उदाहरण सामान्य महिलाओं के जीवन की वास्तविकता से दूर थे। कुल मिलाकर, शिक्षा तक महिलाओं की पहुंच एक वर्ग विशेष और विशेष परिस्थितियों तक ही सीमित थी।

4. पर्दा प्रथा और यौनिकता की अवधारणा

पर्दा प्रथा का विस्तार इस काल में विशेष रूप से मुस्लिम प्रभाव के आगमन के पश्चात बढ़ा, लेकिन हिन्दू समाज में भी स्त्रियों की यौनिकता को नियंत्रित करने के लिए सामाजिक नियम बनाए गए थे। ब्राह्मणवादी परंपरा में नारी को 'पतिव्रता' और 'संयमशील' के रूप में आदर्शित किया गया। उनकी यौनिकता को विवाह संस्था के भीतर ही स्वीकार्य माना गया, और इससे बाहर किसी भी व्यवहार को नैतिक अपराध समझा जाता था। समाज ने स्त्रियों की स्वतंत्रता को उनके यौन नियंत्रण से जोड़ दिया था, जिससे पर्दा, एकांतवास (पाटिव्रत्य), और सती जैसी प्रथाओं को धार्मिक और नैतिक स्वरूप प्रदान किया गया। यह व्यवस्था महिलाओं को न केवल सामाजिक दृष्टि से सीमित करती थी, बल्कि उनके व्यक्तिगत अधिकारों को भी नियंत्रित करती थी। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों और निम्न जातियों में पर्दा प्रथा उतनी कठोर नहीं थी, लेकिन कुलीन वर्ग में यह सामाजिक मर्यादा का प्रतीक बन चुकी थी।

आर्थिक भूमिका

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं की आर्थिक भूमिका बहुआयामी थी, हालांकि सामाजिक मान्यताओं और जातीय संरचनाओं ने उनके योगदान को अक्सर गौण कर दिया। कृषक वर्ग और श्रमिक जातियों की महिलाएं घरेलू कार्यों के साथ-साथ खेतों में श्रम करती थीं, पशुपालन, बीज बोने, कटाई और जल-सिंचन जैसे कार्यों में भी भाग लेती थीं। ये महिलाएं कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ थीं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। इसके अलावा, मजदूरी, जल संग्रहण, ईंधन और चारा इकट्ठा करने जैसे श्रम-आधारित कार्यों में

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

भी महिलाएं सक्रिय थीं। यह कार्य उनकी आजीविका का हिस्सा था, लेकिन अक्सर इन्हें 'गृहकार्य' मानकर आर्थिक मूल्य नहीं दिया जाता था। सामाजिक श्रेणियों में ऊँच-नीच के कारण, उच्च जातियों की स्त्रियों को खेतों या सार्वजनिक श्रम में भाग लेने की अनुमति नहीं थी, जिससे उनका आर्थिक योगदान सीमित हो गया था।

संपत्ति और स्वामी अधिकारों की दृष्टि से महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से नियंत्रित थी। ब्राह्मण धर्मशास्त्रों में स्त्रियों को स्वतः संपत्ति की अधिकारिणी नहीं माना गया, लेकिन उन्हें 'स्त्रीधन' जैसे सीमित संसाधनों की स्वामिनी अवश्य स्वीकार किया गया था। यह स्त्रीधन मुख्यतः विवाह के समय प्राप्त उपहारों पर आधारित होता था, जिसे महिला जीवनभर अपने पास रख सकती थी। हालांकि कुछ अपवादों को छोड़कर, भूमि स्वामित्व या विरासत में महिलाओं की हिस्सेदारी बहुत सीमित थी। वहीं दस्तकारी, बुनाई, कढ़ाई, मिट्टी के बर्तन बनाना, कपड़ा रंगना आदि कुटीर उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी व्यापक थी। ये कार्य घरेलू दायरे में होते हुए भी बाजार से जुड़े होते थे और स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते थे। कुछ महिलाएं सेवा कार्यों में भी संलग्न थीं, जैसे दाइयां, परिचारिकाएं, नर्तकियां या गायन से संबंधित कार्य। यद्यपि इन कार्यों को सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा जाता था, लेकिन उन्होंने महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता का अवसर दिया। इस प्रकार, पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाएं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थीं, भले ही समाज ने उनके श्रम और अधिकारों को सीमित मान्यता दी हो।

धार्मिक और सांस्कृतिक भूमिका

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं की धार्मिक और सांस्कृतिक भूमिका सामाजिक संरचना के अनुरूप सीमित किन्तु प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण थी। इस क्षेत्र में बौद्ध, जैन और हिन्दू परंपराएं एक साथ विद्यमान थीं, जिनका महिलाओं की धार्मिक स्थिति पर अलग-अलग प्रभाव पड़ा। बौद्ध धर्म में महिलाओं को भिक्षुणी बनने और धार्मिक साधना में भाग लेने का अवसर प्राप्त था। महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों को संघ में शामिल करने की अनुमति दी, जिससे वे आध्यात्मिक विकास और बौद्ध प्रचार में सक्रिय हो सकीं। इसी प्रकार, जैन धर्म में भी महिलाएं तपस्विनी और आर्यिका बनकर समाज में धार्मिक आदर्श प्रस्तुत करती थीं। हिन्दू धर्म में महिलाओं की धार्मिक भूमिका अधिक रीतिकालीन और कर्मकांड प्रधान थी, जहाँ वे व्रत, पूजन और पारिवारिक धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदार थीं। वे देवी पूजा, तुलसी पूजन, करवा चौथ, तीज आदि व्रतों के माध्यम से धार्मिक जीवन का हिस्सा बनती थीं, लेकिन इन भूमिकाओं में स्वतंत्रता की अपेक्षा कर्तव्यों की प्रधानता अधिक थी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महिलाओं की भूमिका प्रतीकात्मक रूप से सशक्त दिखाई देती है। गंगा घाटी क्षेत्र में देवी परंपरा बहुत प्रबल थी — जैसे दुर्गा, काली, लक्ष्मी, और सरस्वती — जिनकी उपासना ने नारी के शक्ति स्वरूप को सामाजिक चेतना में प्रतिष्ठित किया। भक्ति आंदोलन के आरंभिक चरणों में कुछ महिला संतों जैसे अक्का महादेवी और अण्डाल (तमिल क्षेत्र)ने समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक असमानताओं को चुनौती दी, हालांकि उनकी संख्या सीमित थी। लोक परंपराओं में, विशेषकर गीत, कथा और नाट्य रूपों में, महिलाएं प्रमुख भूमिका निभाती थीं। उन्होंने सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और आगे बढ़ाने में योगदान दिया, यद्यपि उनका स्थान पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित था। महिलाओं ने कथावाचन, लोकगीत गायन और तीज-त्योहारों के आयोजन के माध्यम से समाज में सांस्कृतिक एकता और धार्मिक भावना को जीवित रखा। हालांकि वे धार्मिक संस्थानों में निर्णायक भूमिका से वंचित थीं, फिर भी वे घरेलू और लोक-धार्मिक क्षेत्र में सांस्कृतिक उत्तराधिकार की वाहक बनी रहीं। इस प्रकार, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी ने गंगा घाटी की सामाजिक चेतना को दिशा देने में अप्रत्यक्ष लेकिन स्थायी प्रभाव डाला।

जाति और वर्ग के आधार पर भिन्नता

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जाति और वर्ग के आधार पर स्पष्ट रूप से विभाजित थी। उच्च जातियों की स्त्रियों, विशेषतः ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग की महिलाओं को पारंपरिक मर्यादाओं, शुद्धता के नियमों और सामाजिक प्रतिबंधों का कठोर पालन करना पड़ता था। वे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा रीति और शिक्षा से वंचित रखने जैसे कठोर नियमों के अंतर्गत जीवन व्यतीत करती थीं। इन महिलाओं को परिवार की 'इज्जत' और 'मर्यादा' का प्रतीक माना जाता था, जिससे उनकी स्वतंत्रता और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी सीमित हो गई थी। उच्च वर्गों की स्त्रियों को धार्मिक कार्यों में भागीदारी केवल गृहस्थ पूजा तक ही सीमित थी, जबकि वे राजनीतिक रूप से भी सामान्यतः पर्दे के पीछे से ही प्रभाव डालती थीं। उनके पास आर्थिक संसाधन हो सकते थे, लेकिन उन पर नियंत्रण प्रायः पुरुषों का ही रहता था।

इसके विपरीत, निम्न जातियों एवं श्रमिक वर्ग की स्त्रियों की स्थिति भिन्न थी। इन वर्गों की महिलाएं अधिक श्रमशील जीवन जीती थीं और उन्हें कृषि, निर्माण कार्य, दस्तकारी तथा घरेलू सेवाओं में सक्रिय भागीदारी करनी पड़ती थी। हालांकि उनका कार्य शारीरिक रूप से कठिन था और सामाजिक दृष्टि से सम्मानित नहीं माना जाता था, फिर भी उनके पास कुछ हद तक स्वतंत्रता थी जो उच्च जातियों की स्त्रियों को नहीं थी। विधवा पुनर्विवाह, श्रम में स्वतंत्र भागीदारी और घरेलू निर्णयों में सक्रियता जैसी विशेषताएं निम्न वर्ग की महिलाओं को अधिक व्यावहारिक स्वतंत्रता प्रदान करती थीं। परंतु सामाजिक अपमान, यौन शोषण

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

और दमन की स्थितियाँ उनके जीवन का हिस्सा भी थीं। जाति व्यवस्था के चलते उन्हें धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में सीमित भूमिका ही मिलती थी। इस प्रकार, गंगा घाटी में जाति और वर्ग ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को गहराई से प्रभावित किया—जहाँ उच्च जातियों की महिलाएं सम्मान के नाम पर सीमित थीं और निम्न वर्ग की महिलाएं स्वतंत्र होते हुए भी सामाजिक असुरक्षा में जी रहीं थीं।

महिला अधिकारों की सीमाएं और विरोधाभास

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं के अधिकारों को धार्मिक ग्रंथों, सामाजिक रीति-नीतियों और परंपराओं द्वारा नियंत्रित किया गया था। महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति और राजनीतिक भागीदारी जैसे अधिकार बहुत सीमित रूप में प्राप्त थे। स्त्रियों का स्थान पारिवारिक और सामाजिक संरचना में अधिकतर अधीनस्थ था, और उन्हें जीवन के अधिकांश निर्णयों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने का अवसर नहीं दिया जाता था। विधवा विवाह, पुनर्विवाह और उत्तराधिकार जैसे अधिकारों पर सामाजिक प्रतिबंध थे, विशेषकर उच्च जातियों में। धर्मशास्त्रों और स्मृतियों ने पुरुषों को परिवार का स्वामी घोषित करते हुए स्त्रियों को आजीवन पुरुष संरक्षण में रखने की व्यवस्था को नैतिक रूप से उचित ठहराया।

इन सीमाओं के बीच विरोधाभास यह था कि जिन स्त्रियों को सामाजिक जीवन में सीमित रखा गया, उन्हें देवी रूप में पूजा भी गया। दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती जैसी देवियों की आराधना में स्त्री को शक्ति, धन और ज्ञान की प्रतीक माना गया, परंतु व्यवहारिक जीवन में स्त्रियों को इन गुणों से वंचित रखा गया। इसी प्रकार, भक्ति आंदोलन में स्त्रियों को आध्यात्मिक मुक्ति की पात्र तो माना गया, लेकिन समाज ने उन्हें वैसा स्थान कभी नहीं दिया जैसा पुरुषों को प्राप्त था। यह विरोधाभास भारतीय समाज की मानसिकता को दर्शाता है, जहाँ आदर्श रूप में नारी का गुणगान होता है लेकिन वास्तविक जीवन में उन्हें नियंत्रित और सीमित किया जाता है।

साथ ही, निम्न जातियों की महिलाओं को श्रम और आजीविका के कार्यों में अधिक स्वतंत्रता तो थी, लेकिन वे सामाजिक असुरक्षा, यौन शोषण और सम्मानहीनता का शिकार थीं। इस प्रकार, अधिकारों की जो भी सीमित संभावनाएं थीं, वे जाति और वर्ग के अनुसार और भी असमान हो जाती थीं। महिला अधिकारों का यह ढांचा विरोधाभासों से भरा था — जहाँ एक ओर उन्हें गरिमा का प्रतीक माना गया, वहीं दूसरी ओर उन्हें अपने ही जीवन पर नियंत्रण से वंचित रखा गया।

निष्कर्ष

पूर्व मध्यकालीन गंगा घाटी में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जटिल, बहुआयामी और विविधता से भरी हुई थी, जो उस काल की धार्मिक मान्यताओं, जातिगत संरचना, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक परंपराओं से गहराई से जुड़ी हुई थी। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ने महिलाओं को सीमित भूमिकाओं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

में बाँध रखा था, विशेषतः उच्च जातियों में, जहाँ उन्हें पर्दे, मर्यादा और गृहस्थ कर्तव्यों तक सीमित कर दिया गया था। शिक्षा, संपत्ति अधिकार और राजनीतिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति बहुत सीमित थी, लेकिन कुछ अपवादों के रूप में विदुषी, भिक्षुणी या राजमाताओं की भूमिका समाज में दिखाई देती है। निम्न जातियों की महिलाएं अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र थीं और कृषि, दस्तकारी तथा श्रमिक कार्यों में उनका योगदान सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, परंतु उन्हें सामाजिक सम्मान और सुरक्षा से वंचित रखा गया। धार्मिक दृष्टि से महिलाएं व्रत, पूजन और देवी उपासना में सक्रिय थीं, किन्तु धार्मिक संस्थानों के निर्णयकारी स्तर से वे प्रायः बाहर ही रखी गईं। सांस्कृतिक रूप से देवी स्वरूपों के माध्यम से उन्हें शक्ति और आदर्श का प्रतीक तो बनाया गया, परंतु व्यवहारिक जीवन में उनका अस्तित्व सीमित और अनुशासित रहा। गंगा घाटी की यह स्थिति इस बात को उजागर करती है कि महिलाओं की सामाजिक भूमिका केवल घरेलू दायरे तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी निरंतर योगदान दिया, भले ही उन्हें उसका पूर्ण सामाजिक मूल्य या स्वायत्तता नहीं मिल सकी। यह अध्ययन इस ओर संकेत करता है कि ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की भूमिका को केवल दमन के संदर्भ में नहीं, बल्कि उनके सक्रिय योगदान और परिस्थितियों के अनुरूप अनुकूलन क्षमता के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

संदर्भ सूची

1. विके ठाकुर और आर. के. सिन्हा (2005, जनवरी) – *प्रारंभिक मध्य गंगा घाटी में लैंगिक मुद्दे (1500 ई.पू.–300 ई.पू.)*, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 66, पृष्ठ 63-69।
2. रोमिला थापर (1999) – *वंश परंपरा से राज्य तक: गंगा घाटी में पहली सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य में सामाजिक संरचनाएं*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. सतीश कुमार (2015) – *गाहड़वाल काल में गंगा घाटी का ग्रामीण समाज और ग्रामीण अर्थव्यवस्था*, सोशल साइंटिस्ट, खंड 43(5/6), पृष्ठ 29-45।
4. एस. के. पांडा (1991) – *मध्यकालीन उड़ीसा: एक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन*, मित्तल पब्लिकेशंस।
5. एम. के. कुमारी (1990) – *मध्यकालीन आंध्र प्रदेश में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन*, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।
6. सौमित्र चक्रवर्ती – *सामाजिक मानदंडों को लागू करना? प्रारंभिक मध्यकालीन पश्चिमी भारत में क्षेत्रीय अभिजात वर्ग और स्थानीय समाज*।
7. सतीश चंद्र (2008) – *मध्यकालीन भारतीय इतिहास में सामाजिक परिवर्तन और विकास*, हर आनंद पब्लिकेशंस।
8. आर. के. वर्मा (2002) – *प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में सामंती सामाजिक संरचना: त्रिपुरी के कलचुरियों का अध्ययन*, अनामिका प्रकाशन एवं वितरक।
9. म. द्विवेदी और एस. मलिक (2022) – *वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति*, जर्नल ऑफ पॉजिटिव स्कूल साइकोलॉजी, खंड 6(3)।
10. एन. वी. मुसाटोवा और ए. वी. मिनझुरेंको – *मध्य युग में भारत: जातियाँ और समुदाय*, उच्च शिक्षा प्रकाशन।
11. . एच. एलेंस (2007) – *पंजाब का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास: प्रागैतिहासिक, प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन काल*
12. खोझे (2021) – *प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक युग में भारतीय महिलाओं की स्थिति*, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, खंड 8(4)।